ISSN : 2581-8872 Vol -3, No. - 2, March - 2021

UIJMSR

Unnati International Journal of Multidisciplinary Scientific Research

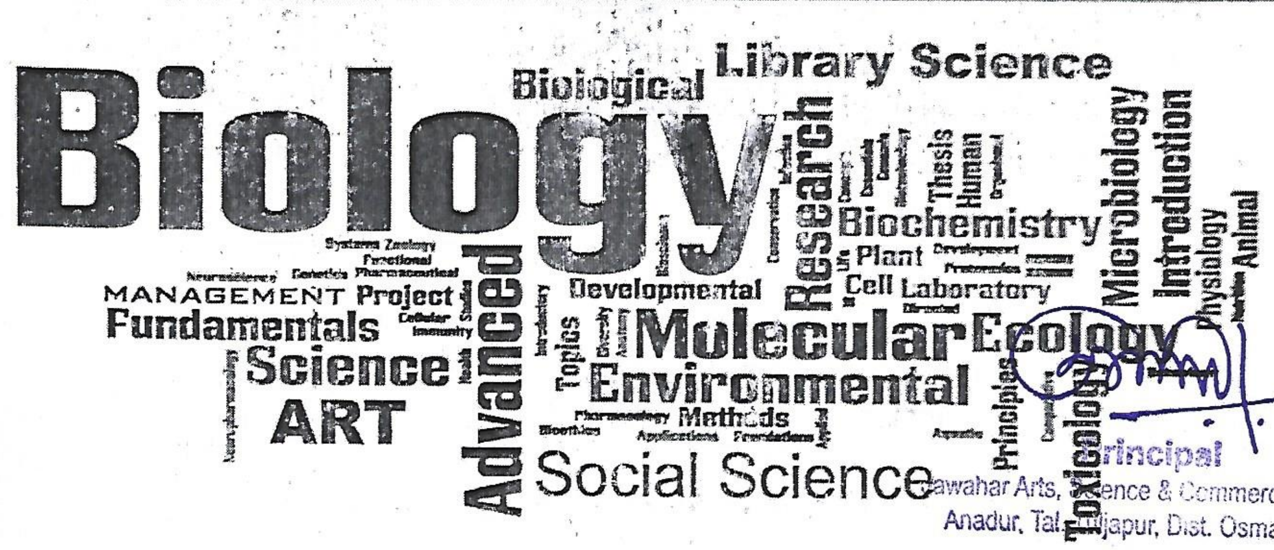

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College
Anadur, Tal. Tuljapur, Dist. Osmanabad.

Peer Reviewed - Refereed Journal
Impact Factor - 4.8, Open Access,
Double Blind, Monthly Online Journal

Google scholar | International ISRS Scientific Research Solution | Indian Tech | GLOBAL CERTIFICATION SERVICES | Radiant Group of Institution

EDITOR
PRASHANT KUMAR
PUBLISHED BY
International Scientific Research Solution
Web : www.srfresearchjournal.com
Email : isrsjournal@gmail.com

Principal
Jawahar Arts, Sc...
Andur Tal. T...

CONTENTS

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	मीडिया, मर्डर और सेक्स	डॉ. बसंत कुमार	1-3
2	पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं की बढ़ती भूमिका	डॉ. जगतसिंह बामनिया डॉ. सपना पटेल	4-9
3	स्त्री शिक्षा से राष्ट्र निर्माण व ज्ञान ज्योती माई सावित्री फुले : एक अध्ययन	Kanchan Kumari Dr. Satish Kumar Pandey	10-14
4	कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव--एक भौगोलिक अध्ययन	प्रा. कांबले दयानंद सखाराम डॉ. सुनिल रजपूत	15-17
5			
6			
7			
8			
9			

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

कोविड-19 का पर्यावरण पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन

प्रा. कांबले दयानंद सखाराम
डॉ. सुनिल रजपूत
जवाहर कला, विज्ञान व वाणिज्य महाविद्यालय, अणदूर, महाराष्ट्र

सारांश :– वर्तमान में विज्ञान की प्रगति के साथ पर्यावरण में मानव की अंधा–धुंध क्रियायें निरन्तर बढ़ रही है। जिनका प्रभाव मानव, जीव–जन्तू एवं वनस्पतियों पर पड़ रहा है। मानव को अपने अस्तित्व के लिए चिन्तनशील होना पड़ेगा। पर्यावरण विकट समस्याओं से ग्रसित है। संपूर्ण संसार चिंतित है परंतु इसकी सुरक्षा एवं सरंक्षण की दिशा में अग्रसर नही है। पर्यावरण परिर्तन 21 वीं सदी की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। मनुष्य केवल कुछ कदम आगे बढ़ सकते थे ऊपर तक नहीं। लेकिन पिछले कुछ महिनों के दौरान, कम समय में COVID-19 के विश्वव्यापी प्रसार ने औद्योगिक गतिविधियों, सड़क यातायात और पर्यटन में लक्षणीय कमी ला दी है। इस संकट के समय में प्रकृति के साथ प्रतिबंधित मानव संपर्क प्रकृति और पर्यावरण के लिए एक आशीर्वाद के रूप मे प्रकट हुआ है। दुनियाभर की रिपोर्ट से संकेत मिल रहा है की, कोवीड–19 के प्रकोप के बाद नदीयों, वायू, पानी, पर्यावरणीय स्थितियों में सुधार हो रहा है ओर वनय जीवन खिल रहा है। COVID-19 के कारण लॉकडाऊन की घोषणा के बार, हवा, पर्यावरणीय मानकों जैसे नदियों में पानी की गुणवत्ता ने सुधार के लिए संकेत देना शुरूकर दिया है। यह पेपर इस महामारी की स्थिती के पूर्व और बाद के लॉक डाउन के दौरान पर्यावरण में सुधार के साक्ष्य प्रदान करता है। पर्यावरण और समाज पर तालाबंदी का सकारात्मक प्रभाव हुआ है।

प्रस्तावना :– प्रकृति ने हमें एक स्वच्छ और स्वस्थ वातावरण सौंपा था। किंतु मनुष्य ने आपने लालची पन और विकास के नाम पर उसे खतरे में ड़ाल दिया है। विज्ञान की बढ़ती प्रकृति ने एक और तो हमारे लिए पर्यावरण को दूषित करके मानव के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। पर्यावरण दो शब्दों से मिलकर बना है परि + आवरण जिसका अर्थ है। हमारे चारों और घिरा हुआ वातावरण। पर्यावरण और मानव का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। पर्यावरण से मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। पर्यावरण से हमें जल, वायु आदि साधन प्राप्त होते है। पर्यावरण को जो एक शब्द पहले से ज्यादा नुकसान पहुंचा रहा है, वो है "विकास"। विकास की अंधी दौड़ मे मनुष्य ने पर्यावरण का बुरा हाल कर दिया है और यह पिछले कई दशकों से चिन्ता का कारण बना हुआ है। विकास की रफ्तार का पर्यावरण पर हो रहे अत्याचार से निपटने के लिए दुनिया के सभी देश कोशिश कर रहे है। लेकिन पिछले कुछ महिनों से पर्यावरण में एक अनोखा बदलाव आ गया है, और इस आकस्मिक बदलाव का कारण बना कोरोना वायरस कोविड–19 जानलेवा वायरस की शुरूआत चीन के वुहान शहर से हुई और थोड़े ही समय में इस ने दुनिया में उथल–पुथल मचा कर रख दी।

कीवर्ड :– कोरोना वायरस, वातावरण, पर्यावरणीय संकेत में पर्यावरण सुधार देखा गया।

विषय विश्लेषण :– वर्तमान में विज्ञान की प्रगति के साथ पर्यावरण में मानव की अंधा–धुंद क्रियायें निरन्तर बढ़ रही है। जिनका प्रभाव मानव, जीव जन्तु एवं वनस्पतियों पर पड़ रहा है। मानव को अपने अस्तित्व के लिए चिन्तलशील होना पड़ेगा। मनुष्य की विकासशील प्रकृति के कारण पर्यावरण के अन्यान्य आपदावों का अत्याधिक दोहन किया गया जिस कारण पर्यावरण असन्तुलन की और अग्रसर हो गया जिसका प्रभाव मनुष्य, जीव–जन्तु एवं वनस्पितियों पर पड़ने लगा। सभी के अस्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लग गया है। विश्वस्तर पर पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी चिन्तन किया जाने लगा एवं अनुसंधान प्रारम्भ किया गया। भूगोलविदो ने 1970 के पश्चात पर्यावरण का व्यवस्थित अध्ययन प्रारम्भ किया। विश्वविद्यालयीन स्तर पर स्नातक एवं स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में पर्यावरण अध्ययन को सम्मिलित कर इसके महत्व को और अधिक बढ़ा दिया।

पर्यावरण शब्द व्यापक अर्थोवाला हैं इसका प्रायः समस्त परिस्थितिकी अथवा परिवृत्ति (Total Set of Surroundings) परिवेश, असा–पास अथवा पास–पडोस, जीवन यापन एवं कार्य प्रणाली की दशायें वनस्पितियों एवं जीव–जन्तुओ के विकास की दशायें आदि अर्थो में प्रयोग किया जाता हैं वास्तव में environment शब्द फ्रेंच भाषा के Environer शब्द

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

से बना है जिसका तात्पर्य समस्त परिस्थिति की होता है। भूगोल मे पर्यावरण का एक विशेष महत्व है। इसका प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मानव से संबंध है। बौद्धिक एवं शारिरिक क्षमता, कार्य प्रणाली, व्यवहार, आचार–विचार, वेश–भूषा, धर्म आदि पर पर्यावरण का प्रभाव पडता है। मानव विशिष्ट पर्यावरण में जन्म लेकर उसके उपादानों का उपयोग करता हुआ इसमें काफी कुछ परिवर्तन करता है।

मानव की विकासशील प्रवृत्ति के कारण उसकी आवश्यकताओं की वृद्धि हुई है। फलस्वरूप अन्यान्य उद्योग, धन्धों, अविष्कारों में स्वयंचलित वाहनों, रासायनिक उर्वरकों, खनिज उत्खनन तथा वन विनाशों आदि के कारण पर्यावरण में असंतुलन उत्पन्न हो गया है।

कोरोना वायरस जिसने सारे विश्वभर में कोहराम सा मचा दिया है। कोरोना वायरस यह एक बहुत ही सूक्ष्म वायरस हैं जिसको हम आम भाषा में विषाणु भी कहते है। यह वायरस सामान्य ऑखों से देखा नही जा सकता है। यह एक ऐसा वायरस है जो हमारी सांस लेने और छोड़ने की प्रकिया से जुड़ा हुआ है। यह वायरस हमारे गले, खास नली और फेफडों पर सीधा आकमण करता है और इनको बहुत तेजी के साथ निष्क्रिय करना शुरु कर देता है। इसके अलावा यह वायरस ज्यादा खतरनाक इसलिए भी है क्यों कि यह व्यक्ति से व्यक्ति, सतह और हवा के माध्यम से फैलता है।

कोरोना वायरस का एक समुह है जो जुनोटिक संचनरण के माध्यम से मानव को प्रभावित करता है। पिछले दो दशकों में यह तीसरी बार है कि उपन्यास वायरस ने महामारी की स्थिति पैदा की है। 2003 में गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम (SARS) 2012 में मध्य पूर्व श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस के बाद कोरोना वायरस COVID-19 यह 31 दिसंबर, 2019 को चीन के वुहान शहर में पहली बार सामने आया था। उसके बाद शहर में दुनिया में सब कुछ उलट पुलट हो गया। WHO के महानिदेशक ने COVID-19 घोषित किया, जो कोरोना वायरस भोग 2019 का एक संक्षिप्त रूप है।

भारत मे पहला :– मामला 30 जनवरी को केरल के त्रिशूर जिले के एक छात्र का बताया गया, जो चीन के वुहान विश्व विद्यालय से छुटी के लिए घर लौटा था। वर्तमान समय में कोरोना ने पुरे विश्व भर में एक अत्यंत ही घातक महामारी का रूप ले लिया है। कोरोना वायरस के चलते पूरी दुनिया में लंबे समय तक लॉकडाउन रहा। इसके चलते प्रकृति में मनुष्य का दखल एकदम बंद हो गया। कोरोना वायरस से मानवता को जरुर बड़ा नुकसान हुआ है लेकिन पर्यावरण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पडा है।

दुनिया भर मे लगाए गए कोरोना लॉकडाउन की शुरूआत वुहान शहर से हुई। लेकिन तब तक यह खतरनाक वायरस दुनिया के अलग–अलग देशों तक पहुंच गया था। इटली, ईरान, स्पेन, अमेरिका, फ्रान्स, भारत और दुनिया के अनेक बड़े राष्ट्र इसके दंश को झेलते रहे है। संक्रमण को रोकने के लिए तालाबंदी और सामाजिक दुरी को ही सबसे महत्वपूर्ण हथियार माना गया है। हालांकि इन पाबंदियो का नतीजा सामने आया जिसके बारे में किसीने शायद सोचा भी न था। यह नतीजा पर्यावरण सुधार के रूप मे सामने आया।

1. हवा की शुद्धता :– कई देशों मे लॉकडाउन लगाए जाने के बाद, लोगों दवारा यात्रा करने मे भारी कमी आई। चाहे वह अपनी कारों से हो या ट्रेनो और उड़ानों से। यहां तक कि उद्योंगो को भी बंद कर दिया। इसके कारण वायू प्रदूषण में काफी गिरावट आई। फॅक्ट्रियों से निकलने वाली जहरीली गैसों और कई प्रकार के रसायनों की वजह से हवा की शुध्दता बहुत खराब हो जाती थी। लेकिन लॉकडाउन के दौरान हवा की शुध्दता में काफी सुधार देखा गया है। दिल्ली को दुनिया के सबसे जादा प्रदूशित शहरों में गिना जाता है लेकिन 21 दिन के लॉकडाउन के बाद वहा की अबोहवा एकदम बदली नजर आयी। इतना साफ और नीला आसमान दिल्ली मे रहने वाले बहुत से लोगो में शायद पहली बार देखा हैं

2) पानी की शुध्दता :– भारत में बहुत से पानी के ऐसे स्त्रोत हैं जिनको मनुष्य इस्तेमाल करता हैं। भारत में सबसे पवित्र माने जाने वाली गंगा नदी लॉकडाउन से पहले दुर्गन्धित और मैली थी, मगर फिलहाल के दिनों मे उसका जल पीने योग्य बन गया हैं सडके सुनसान जरूर दिखी लेकिन यमुना के निर्मल पानी में पक्षियों के चहचहाने की आवाज दिल को छु जाने वाली लगी। वेनिस की झीलों का पानी इतना साफ हो गया है कि उसमें हम मछलियों को तैरता हुआ देख सकते है।

जल परिवहन के साधनों के बंद होने से जलमार्ग के साफ होने में काफी मदत मिली है। महासागर की स्वच्छता भी अब देखने योग्य हो गई है।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

3) वन्यजीवों पर प्रभाव :- वन्यजीवों की तुलना में जहां तक मछली की बात है, तो लॉकडाउन में मछली पकड़ने में गिरावट देखी गई है मछली पकड़ने के व्यापार के लगभग समाप्त हो जाने के बाद अनेक समुद्री जीवों को भी इसका फायदा मिला है।

इसके अलावा जानवरों को रूप से ऐसी जगहों पर घूमते हुए देखा गया है जहां पहले वे जाने की हिम्मत भी नही करते थे। अब उनको खुले तौर पर घूमते हुए देखा जा सकता है यहां तक कि समुद्री को उन क्षेत्रों में लौटते देखा गया है जहां वे अपने अंडे रखने से बचते थे, यह सब कुछ मानव हस्तक्षेप की कमी के कारण ही संभव हो पाया है।

4) वनस्पति पर प्रभाव :- स्वच्छ हवा और पानी के कारण पौधे बेहतर तरीके से बढ रहे है क्योंकि अभी तक कोई मानव हस्तक्षेप नही हो रहा है। लॉकडाउन से पैधों को पनपने, बढने, अधिक कवरेज और ऑक्सिजन का उत्पादन करने का मौका मिल रहा हैं लॉकडाउन प्रकृति के घावों पर मरहम लगाने में काफी कामयाब साबित हुआ है। कोरोना वायरस के संक्रमण रोकने के लिए जो कदम उठाये गये उनकी पर्यावरण को सुधार ने में एक बड़ी भूमिका रही है।

निष्कर्ष :- कोरोना ने साबित कर दिया है की, मनुष्य महाशक्ती है व हथियार जो पुरी दुनिया को नष्ट करने में सक्षम है। लेकिन फिर भी इंसान पैदा कर रहे है तो प्रकृति के साथ खिलवाड कर रहा है। अब प्रकृति कि ही साथ मनुष्य को नष्ट करने के लिए शक्तिशाली है। छोटा वायरस जिसमे सर्दी और खांसी जैसे बहुत आम लक्षण होते है। संचारण को रोखने और बाधित करने का सबसे अच्छा तरीखा है। अपनी सुरक्षा करना और हाथों को बार बार धोना या अल्कोहल आधारित रगड़ से, चेहरे को नही छुना और सामाजिक दुरी रखने के मापदंडो का नियमित रूप से पालन करना। मास्क का उपयोग है। किसी जरूरी काम की वजह से ही किसी को घर से बाहर जाना फायदे मंद है। लॉकडाउन के दौरान घर पर रहना और घर से काम करना चाहिए। अच्छे स्वास्थ के लिए सबसे अच्छा तारीका है "योगा" जो हमारे शरीर को फिर से ऊर्जा देता हैं। हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाने, मन, एकाग्रता और आत्मविश्वास का स्तर, मानवता और सकारात्मक व्यक्तितत्व विकास के लिए आवश्यक है। लॉकडाउन समय के उपयोग के कारण भविष्य के बारे में चिंता करने की आवश्यकता नही है। सब कुछ ठीक करता है। यदि नकारात्मक प्रभाव है तो हमारे पास सिखने के लिए विभिन्न सकारात्मक सिखे है। इसने कोवीड 19 ने साबित कर दिया है की, प्रकृति ने हमे सभी संसाधन प्रदान किये है। एक सुंदर जीवन जीने के लिए और वह एक माँ की तरह हमारा पोषण करती है, इसको सम्मान देना चाहिए। और इसकी रक्षा करनी चाहिए। अंधाधुंध विकास और प्राकृतिक संसाधनों की अधिकता स्थिरता की स्तर पर कम से कम होना चाहिए।

पर्यावरण एक ऐसा रंगमंच है। जिस पर मानव की समस्त क्रियायें अभिव्यक्त होती है।

संदर्भ ग्रंथ :-

1. डॉ.गायत्री प्रसाद (2012) पर्यावरण भूगोल, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद
2. अलका गौतम (2007) पर्यावरण भूगोल, इलाहाबाद
3. अहिरराव पर्यावरण विज्ञान–निराली प्रकाशन, पुणे
4. तु.मा.वराट भूगोल–गाज प्रकाशन, अहमद नगर
5. डॉ.एम.एस.सिसोदिया UGC/NET/SLET भूगोल, उपकार प्रकाशन, आगरा 2.

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad